

THE GREAT SAINT OF KASHMIR

RESHI PEER

ऋषि पीर

RISHI - PEER

PEER PANDIT PADSHAH
HARDU JAHAN MUSHKIL ASAN

(Emperor of two worlds and answer to difficulties of all kinds)

प्रथम संस्करण - 1993

Price : Rs. 10/-

Leo Printers & Publishers (P) Ltd.
201-202/12 - Aditya Complex
Preet Vihar, Community Centre, Delhi - 110092

DEDICATED TO HIS HOLINESS

PEER PANDIT PADSHAH
(Greatest Saint of Kashmir)

This book has a nominal price of Rs. 10/- However the entire sale proceeds of the book have been offered by the Publishers to **His Holiness Peer Pandit Padshah**, as a NIAZ. This amount will be utilized for purchasing of land and construction of new Shrine at Jammu.

भूमिका

काश्मीर अतीत काल से मनुषयों विद्वानों तथा सन्तों की भूमि, रह चुकी हैं। यही वह पुण्य भूमि है, जहाँ लोग दूर-दूर से आकर सन्तों की शरण में जाकर अपनी आध्यात्मिक पिपासा को शान्त करते थे। इन्हीं सन्तों में लल्लद्यद, कृष्णकार, श्रीकण्ठ, पीर साहब, आदि का नाम आदर से लिया जाता है।

शत्रहवीं शती के ऋषि पीर का नाम अग्रगण्य है। पीर पादशाह ने अपनी दिव्य शक्तियों से लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया था। उन्होंने अपनी अद्भुत शक्ति का प्रयोग आध्यात्मिक चिन्तन तथा पीड़ित लोगों की पीड़ा को हरने में किया।

इन महान् विभूति जीवन तथा शिक्षा आदि का परिचय सबकों नहीं है। इस कमी को पूरा करने के लिए हम यह छोटा सा प्रयास प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि इससे हम अपने गुरु पीर पादशाह के जीवन तथा चमत्कारों से परिचित होकर अपने जीवन को लाभान्वित करेंगे। यह प्रस्तुक उनके चरण-कमलों पर समर्पित है।

विषय-सूची

पीर साहिब का शुभ जन्म 8

सोपोर में एक मस्त योगी का प्रकट होना 10

शुभ जन्म 12

पीर साहिब का यज्ञोपवीत तथा शिक्षा 14

तपस्या का आरम्भ 15

तपस्या का पहला दौर 19

मीशा साहिब की जन्म कथा 21

कृष्णकार की जन्म कथा 24

श्री कृष्णकार की फारसी कविता में देवी की स्तुति 26

पीर साहिब के चमत्कार 28

भूमिका काश्मीरी भाषा में

दिलस अन्दर युहय, वुथ म्य खयाला,
ब वनहा पीर सूबॅन पूर हाला ।
कशीरे मजं यहोंय सतं द्राव मशूहर ।।
कमालात तिथ करिन गय लूक मशकूर ।।
तपस्या तिछ कठिन कंरिथ बन्योलस ज्ञान ।।
मनुष्य क्या देवता आंसिस करान मान ।।
मगुंस यिम यी दिवान ओसुस ब यकदम ।
तिमय कथ वार हिन्दियस मन्ज म्य लेछम ।।
असिन्द हालात करि वरनन म्य सांरी ।
यि केन्ह डयूठूम त बूजुम कन दार दारी ।।
यिथिस संतस भविन जय जय नमस्कार ।
म्य दीयतन यथ अगाद भवसरस तार ।।
परन यिम यथ कर्यख दीवी दया पूर ।
चल्यख दुख तय बन्यय सुख बेयि अछन नूर ।।
बुठान सांहिब दिलां हरकस ब यांरी ।
दया दृष्टी मंगान दिलबर बुज़ारी ।।

पीर साहिब का शुभ जन्म

श्रीनगर स्थित बटयार में एक धनाढ्य मनुष्य गोविन्द जू नामक हो गुज़रे हैं, ससांरिक उपद्रवों के कारण वे घर में अकेले ही रह गए थे। कई प्रयत्नों के करने पर भी वे पचास वर्ष की आयु तक कुँवारे ही रह गये थे। अन्त में एक समय एक वृद्ध स्त्री उनके घर पर इसी सम्बन्ध में आई। गोविन्द जू ने उनका यथा योग्य सम्मान किया। नकद तथा जिन्स देकर भी उन्हें प्रसन्न किया। वृद्ध स्त्री ने उनका यह व्यवहार देखकर उसे यह कहा कि उनका (गोविन्द जू) का विवाह सम्भव हो सकता है तथा यह आश्वासन देकर वह वहां से विदा हुई।

अपने प्रण को पूरा करने के लिए वह वृद्ध स्त्री इधर-उधर प्रबन्ध करते-करते गुशी नामक ग्राम में पहुँच गई। वहां अपनी चतुरता से एक विधवा के घर गोविन्द जू का ब्याह निश्चित किया। अपनी सफलता से प्रसन्न होकर वह गोविन्द जू के घर आई और उनको सफलता का समाचार कह सुनाया। अब विवाह का प्रबन्ध होने लगा। निश्चित दिन पर गोविन्द जू ने दूल्हा बनकर बरातियों के समेत सोपोर की ओर प्रस्थान किया। वहाँ विधवा सांस दूल्हे की काफी आयु को देखकर चिन्तित हो गई और उसने सम्बन्ध कराने वाली वृद्ध स्त्री को भी जली कटी सुनाई। किन्तु अन्त में कई सज्ञनों के ढाढस बधाने पर कि यह ईश्वर की करनी है उसे राजी करा लिया तथा शुभ

विवाह सम्पूर्ण हुआ दोनों दुल्हा दुल्हन अब बारातियों समेत श्रीनगर लौट आए। वृद्ध स्त्री ने खूब पुरस्कार प्राप्त किया तथा गोविन्द जू के घर खुशियाँ मनाई जाने लगी। प्रत्येक ओर से बधाई सन्देश मिलने लगे, परन्तु दुल्हन की माता फिर भी चिन्ताग्रस्त थी। दामाद की बड़ी आयु को ध्यान में रख कर उसे सन्तान होने में सन्देह था परन्तु उसे सन्तान की कामना थी इसलिए अब वह साधुओं सन्तों तथा परम तीर्थों का सहारा लेकर दौड़ धूप करने लगी। देवी की लीला निराली होती है। इस बारे में भी दो विचार धाराएँ सुनने में आई हैं। कई लोग कहते हैं कि गुशी ग्राम में एक चश्मा था। लड़की की माता प्रायः वहां जाया करती थी और वहां अपनी लड़की के गर्भाधान के लिए प्रार्थना करती थी इस प्रकार कुछ समय बीतने के पश्चात् उनको स्वपन्न में लड़की के गर्भ ठहरने का आश्वासन दिया गया।

यह भी कहा जाता है कि शारदा देवी, हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है। जहाँ पर प्रत्येक वर्ष यज्ञ रचाया जाता है। विधवा माता अपनी लड़की को इसी तीर्थ पर ले गई वहाँ पर फिर यह आकाशवाणी हो गई कि तुम्हारी लड़की को पुत्र होगा।

लड़की अब गर्भवती हो गई थी इस कारण उसकी विधवा माता हर्षित हुई। उसने शुभ दिन पर सामाजिक रीति के अनुसार लड़की को ससुराल भेजा। समय आ चुका था, इस कारण सोपोर पहुँच कर ही उसे प्रसव पीड़ा हुई। परिणाम स्वरूप नाव में ही एक सुपुत्र उत्पन्न हुआ।

सोपोर में एक मस्त योगी का प्रकट होना

सोपोर में रात के समय एक मस्ताना जोगी अकस्मात जाग पड़ा तथा शिव्यों से बोला कि काश्मीर में द्वितीय सूर्य चमक उठा है जरा बाहर जाकर देखों कि किसके घर सुपुत्र ने जन्म लिया है। रात काफी अन्धेरी थी। इधर उधर पूछ ताछ की गई परन्तु कुछ पता न चला। अन्त में जोगी स्वयं ही बाहर निकल आये और पता चला कि नाव में किसी पण्डित स्त्री ने ऐसे लड़के को जन्म दिया है। योगी वहां गया सलाम बजा दी, सोने के दो पौंड़ उसने उस बच्चे के हाथ में उपहार के रूप में रख दिये और नवजात बच्चे का माथा चूमा। योगी ने बच्चे की माता को धीरज दिया तथा बच्चे का ठीक ठीक पालन करने का उपदेश दिया। योगी दर्शन करके चले गए। फिर दूसरे दिन नवजात बच्चे के साथ नारी नाव में श्रीनगर पहुंच गई। घर पहुंचने पर सब हर्षित हुये।

किसी कवि ने फारसी में इस सम्बन्ध में निम्नलिखित शब्द सत्य ही लिखे हैं :-

चूँ पिदर पीरान सरहद जवानी ताज़करद

दर सरे फ़रूख पिसर तारीफ बे अन्दाज करद।

बाग्य गुलशन अज़ सवा सरसबज़ शुद्ध फिरदौस वार

गशत हर सहन चमन चूं सफाए रंगीन निगार ।

बूढ़े पिता को इस अवस्था में पुत्र की प्राप्ति से मानो नया यौवन मिला और अपने पुत्र की प्रशंसा करके कहने लगे कि उनके पुष्पों का चमन स्वर्ग लोक के समान हरा भरा होने लगा और उसके सहन की फुलवाड़ी फूलों से सुगन्धित हो उठी ।

शुभ जन्म

आपका शुभ जन्म वैसाख पंचमी कृष्ण पक्ष 1637 ईस्वी में हुआ। ब्राह्म ने जन्म पत्री बनाई और उसके अनुसार आपके सन्तों तुल्य चिन्ह बताये। आपका घर बधाइयों से गूँज उठा। आपने माता का दूध पीने से इन्कार किया। इस बारे में माता के सभी प्रयत्न निष्फल हुए। इन्हीं दिनों साहिब कोल नामक एक महात्मा हब्बाकदल में बिराजमान थे। माता आपको उसके पास ले गई। और उनको सारा वृतान्त कह सुनाया। साहिब कोल ने जब आप के चिन्ह और गुण सन्तों जैसे देखें तो वे बहुत प्रसन्न हुए तथा आपकी ओर यूँ कह बैठे "जब जन्म लेने में नही शरमाये तो नोष में क्या दोष पायो"। ये शब्द सुनकर आपने दूध पीना शुरू किया। सभी प्रसन्न हुए और साहिब कोल ने आपके (पीर साहिब) के सम्बन्ध में निम्नलिखित भविष्यवाणी फारसी में की:-

मालिके मुल्क व कज़ा व सालिके राहे कदर
जल वह आरा शुद्ध चू अवतारां ब मुल्के काश्मर।
बादशहे रद्द आलम शहराये बहर ब बर
कदरश ता कुदरत ईश्वर बूद नज़दीक तर।

साहिब कोल का कहना है कि पीर साहिब बड़े तपस्वी

होकर पृथ्वी ओर सागर का राज्य पद प्राप्त करेंगे । और उसकी मान्यता देवताओं से कम नहीं होगी । उनको महान योगेश्वर का पद प्राप्त होगा और कशमीर में धर्म अवतार माने जायेंगे।

पीर साहिब का यज्ञोपवीत तथा शिक्षा

आपकी बालावस्था आपके माता पिता के लिए अपरिचित हर्ष उत्पन्न करती थी। वृद्ध पिता को समझो कि नया यौवन मिला। नानी को, जिसने आपके लिय काफी कष्ट सह लिए आपकी बाल क्रीड़ा नेत्रज्योति से अधिक प्रिय थी। इस प्रकार से आपका पालन पोषण बड़े लाड़ प्यार से हुआ।

आपका जातकरण और नामकरण संस्कार बड़ी धूम धाम से मनाया गया। फिर पाँच वर्ष की आयु में आपका यज्ञोपवीत संस्कार भी समाज की रीति के अनुसार किया गया। धूमधाम में कोई कसर न रखी गई। इसके बाद आपको शिक्षा प्राप्ति के लिए पाठशाला भेजा गया। वहाँ आप अपनी तीव्र बुद्धि और योग्यता से सब से बाज़ी ले गए। साथ साथ आपका मन भक्ति मार्ग की ओर झुकने लगा और आपने आगे पढ़ने से मुँह मोड़ा। कुछ समय के उपरान्त आपका विवाह भी काफी शान से किया गया।

बचपन से ही आप त्याग मूर्ति थे और मन ईश्वर भक्ति की ओर ही लगा रहता था। आप भी अपने माता पिता के साथ हारी पर्वत की परिक्रमा के लिए जाने लगे। आप वहां देवी स्तुति और पूजा पाठ की तरफ अपनी श्रद्धा दूसरों से बढ़चढ़ कर दिखाने लगे।

तपस्या का आरम्भ

कुछ समय आप हारी पर्वत रोज़ जाया करते थे । एक दिन देवी-आंगन हारी पर्वत में दो भक्त श्री नानशाह और आत्मराम से आपका परिचय हुआ और वे आपके सेवक बन गए । तब से आप इन के संग ही प्रतिदिन हारी परिक्रमा पर्वत को जाने लगे और देवी आंगन में ही आश्रम बनाया । घर पर आपके पिताजी को घर का निर्वाह चलाने की चिन्ता लगी थी इस कारण वे आपकी रूचि भी इसी और बढ़ाना चाहते आपका ध्यान घर की व्यवस्था की ओर आमुख करना चाहते थे परन्तु आपकी रूचि इसके विपरीत थी । आप त्याग की मूर्ति थे । इसलिए पिता जी के सारे यत्न व्यर्थ ही प्रमाणित हुए । यहाँ तक कि वे स्वर्ग इसी चिन्ता में सिधार गए । अब आपकी माता की परेशानी और भी बढ़ गई किन्तु आपकी स्वतन्त्रता और भी बढ़ गई । अब आप प्रायः दो सेवकों के संग देवी आंगन में ही समय बिताने लगे। आपकी माता ने यह देख कर अपने भ्राता को बुला भेजा।

जब वे आपके घर आये उन्होंने आप की दशा अच्छी तरह भाँप ली और फलस्वरूप आपको अपने गुशी ग्राम लेने पर विवश हुये । वहाँ पर एक योग्य अध्यापक को आपके पढ़ाने के लिए निश्चित किया ताकि शिक्षा जारी रहे परन्तु समझा-बुझाकर भी आप पर कोई प्रभाव न पड़ा । इस समय

के बीच आपको एक बार मस्जिद में इस विचार से बन्द रखा गया, कि शायद आपके सोच विचार में कोई तबदीली आ जाए, परन्तु सब निरर्थक। इधर से आपके दो सेवक आत्माराम और नानशाह आपको श्रीनगर में ढूंढते रहे और अन्त में पता लगने पर गुर्शा ग्राम पहुंच गए। उन्होंने आपको मस्जिद में बन्द पाया। आपने उनको ताला खोलने का ढंग बताया और दरवाज़ा खोलने पर आप बाहर आए। फिर आप तीनों श्रीनगर की ओर चल पड़े। रास्ते में किसी रिश्तेदार के यहाँ से एक भात से भरा देगचा उठाके साथ लाए और पलहालन स्थान पर भोजन खा लिया। इस देगचे को फिर आध्यात्मिक तरीके से लौटा दिया।

दूसरे दिन श्रीनगर पहुँच कर देवी-आंगन में दम लिया। आपकी माता को जब यह सब मालूम हुआ तो उसने आपको घर लौटने पर विवश किया। आपने आज्ञा पालन किया और इस प्रकार आपके दो सेवक आपसे बिछड़ गए। आपने इसके बाद चालीस दिन निरन्तर घुटनों के बल परिक्रमा करने की प्रतिज्ञा की, और सफलता पूर्वक इसे पूर्ण भी किया इसके फलस्वरूप जगतअम्बा ने आपको दर्शन देकर कृतार्थ किया और साथ में इस प्रकार कहा।

श्री ईश्वरी बोली ए दिल पज़ीर
बता दे ब जल्दी मुरादे ज़मीर,
तेरी इस इबादत से हुई शाद पर

अभी से हो तेरा हाल आबाद तर।

अर्थात् मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हुई इसलिए तुम अपना मनोरथ प्रकट करो। आपने ससांरिक ठाठ बाट को तुच्छ समझा कर केवल गुरू उपदेश की कृपा की याचना की। आपकी अगाध ईश्वर भक्ति को देखकर जगत माता ने फिर यूं उत्तर दिया, "अच्छा ! जो मनुष्य आपको पहले मिलेगा वही आपका गुरू होगा।" यह कह कर परमेश्वरी अदृश्य हो गई।

थोड़ी ही दूर चलकर हारी पर्वत मन्दिर के सामने कृष्णकार नामक एक मस्ताना एक चट्टान पर दिखाई दिया, आपने इसकी ओर ध्यान न दिया और आगे चलते रहे, परन्तु मस्ताना ने बुलाया और देवी के उपदेश का स्मरण कराया। आपने उत्तर दिया, कि मर्यादा के अनुसार ब्राह्मण स्वरूप का उपदेश चाहिए। वास्तव में आप उनको पहचान न सके और आगे बढ़े, किन्तु जगत अम्बा के दरबार से आपको उपदेश देने के लिए कृष्णकार को आदेश मिल चुका था। इसलिए कृष्णाकार तुरन्त ही आपके घर पहुँचे और आपकी माता से आपका हुक्का मांग लिया। चिल्लम का एक कश लागाया और आपकी माता से कहा कि पीर साहिब के सिवाय इसे और कोई पीने न पाए। यह कह कर वह चल पड़े। इतने में आप घर पहुँच गए और माता से यह प्रश्न किया कि यहाँ कोई आया तो नहीं था। माता ने मस्ताने का सारा हाल कह सुनाया। आप अब समझ गए कि ईश्वर की इच्छा यही है। चिल्लम के दो कश लगाए

और आपको ज्ञान प्राप्त हुआ । इस बारे में एक और विचार धारा है कि जब आप मस्ताने के पास पहुँचे तो उन्होंने परीक्षा के लिए आप से आग बनवाई और आपसे बोले कि बस्ता लाओ । बस्ता लाने पर उसने इसमें से कुत्ते का बच्चा निकाला तथा उनको आग में भुनने की आपकों आज्ञा दी ताकि नाश्ता किया जाए । यह आश्चर्य जनक हालात देखकर आपका दिल चकित हुआ, परन्तु विवशता के कारण चुप रहे । बड़ी कठिनता से जीते जानवर को आग में तैयार किया । उसके पश्चात् आपने साहिब ने कहा कि नाश्ता लाओ । आग मे देखा तो कुछ न पाया, तो आप बड़े आश्चर्य में पड़ गए । फिर कार साहिब ने कहा कि अच्छा अब बस्ता खोलो अपने जानवर (कुत्ता) को उस में जीवित पाया । आपके मन में मस्ताना योगी की अध्यात्मिक शक्ति का रहस्य खुल गया और उनको सराहने लगे । अब कार साहिब यहां से सीधे चल दिए और आपके घर पहुँच कर उन्होंने आपको उपदेश दिया ।

तपस्या का पहला दौर

इसके बाद आपने माता जी से संसार को त्यागने तथा तपस्या में जीवन बिताने की आज्ञा मांगनी चाही परन्तु माता दिल के टुकड़े सन्तान की जुदाई कब तक सहन करती है । दोनों में काफी बहस हुई । अन्त में निश्चित हुआ कि आप अपनी कुटिया में ही तपस्या करेंगे । आपने रात दिन तन मन से तपस्या आरम्भ की । कहा जाता है कि आप कई बार आग के अंगारे अपने शरीर पर डालते थे । इस तरह से शरीर में बड़े घाव पड़ गए और उनमें कीड़े उत्पन्न हुए । आपके तो सैंकड़ों सेवक बन गए थे उन सेवकों ने आपके शरीर से कीड़ें उठाने की याचना की, किन्तु आपने रोक लिया । उनके हठ करने पर आपने यह कह दिया कि यह सब गुरू द्रोह का दण्ड हैं । आपकी सेवा सेवकों के अतिरिक्त माता भी अपनी ओर से करती रही यद्यपि सेवक सेवा में कोई कमी नहीं रखते थे। कठिन तपस्या करते करते साढ़े चौदह वर्ष बीत गए । परन्तु आपका शरीर ज्यो का त्यों रहा और उज्ञवल सूर्य की तरह चमकने लगा । आपकी मान्यता अब उच्चकोटि के सिद्ध सन्तों में होने लगी, आपने अपना भोड़ा (चढ़ावा) नियाज 141/2 पैसे निश्चित किये । सेवकों की गिनती बारह सौ तक पहुँच गई । लोग जोक दर जोक (दर्शन) के लिए आने लगे और

निश्चित चढ़ावा भी चढ़ाते रहे। यहाँ तक कि साधुओं से भी चढ़ावा लेते रहे। आपके दरबार में सब का मनोरथ पूर्ण होता था। लगातार तपस्या करने के कारण आपकी टागें निर्बल हो चुकी थी। इसलिए सेवकों ने आपके लिए एक पालकी बनवाई जिस में बैठकर आप सैर को जाया करते थे।

मीशा साहिब की जन्म कथा

किश्तवाड़ इलाके के परगना परवली नाम के गांव में निरंजन नामक एक व्यवसायक हो गुज़रा है । इसके घर में कोई सन्तान न थी । वह काफी प्रभावशाली दुकानदार तथा साधु सेवक था । एक दिन उसके दुकान पर कोई साधु आये। निरंजन ने इनकी अच्छी सेवा की और अपने मनकी इच्छा भी प्रकट की । साधु महाराज इसकी सेवा से प्रसन्न हुए थे । इसलिनुन्होंने निरंजन के प्रश्न का इस प्रकार उत्तर दिया कि यहाँ निकट ही एक वन में नानकशाह नामक साधु तपस्या करता है । उनको प्रसन्न करने से ही आपका मनोरथ सिद्ध होगा । साधु सेवक निरंजन ने ऐसा ही किया जिसके परिणाम स्वरूप उनको सन्तान की प्राप्ति हुई । दोनों पति पत्नी अत्यन्त प्रसन्न हुए, किन्तु दुर्भाग्यवंश दोनों के भाग्य में सन्तान का सुख न लिखा था । दोनों एक दूसरे के बाद स्वर्गवास हुए । अब यह अनाथ बच्चा निः सहाय होकर रोटी के लिए मोहताज हो गया । प्रकृति के खेल निराले हैं जहाँ बालक पड़ा था वहाँ नानक शाह साधु प्रकट हुआ । उसने बालक की दशा को देखकर इसको परवली गांव के एक जमींदार के पास रखा । अनाथ बच्चा अब जमींदार के घर ही पाला पोसा गया ।

बच्चा अब पलने लगा परन्तु इसका जातिकर्म, नामकरण, संस्कार नहीं किया गया क्योंकि जमींदार मियाँशाह जाति से

सम्बन्ध रखता था । वैसे जमींदार इसे मियाँशाह के नाम से पुकारने लगा तथा उनको अपने बेटे की तरह पालता रहा । बड़ते बड़ते लड़का 15 वर्ष का हो गया और फिर जमींदारी करने लगा । जमींदारी के साथ साथ लड़का अध्यात्मिक कार्य भी गुप्त रीति से करता रहा । ऐसा प्रतीत होता है कि नानक शाह साधु इसको उपदेश दे चुका था ।

यह बालक नियम अनुसार अपना कार्य करता रहा संयोग की बात है कि लालकार जो रैणवारी श्रीनगर का एक बड़ा व्यापारी था, व्यापार के सम्बन्ध में किश्तवाड़ इसी जमींदार से मिलने के लिए परावली गांव में पहुँचा । इनका पारस्पारिक व्यवसाय सम्बन्धी लेन देन भी था । गाँव में चलते चलते लालाकार ने एक अचम्भा देखा कि एक खेत में एक कव्वा बैलों को हांक रहा था तथा कुछ दूर एक युवक बैठकर अपने पुराने कपड़ें काट कर सी रहा था । जब इस युवक की दृष्टि पण्डित लालाकार पर पड़ी तो शीघ्र ही उठकर बैलों को हांकने लगा । लालाकार ने निकट आकर युवक से पूछा कि तुम कौन हों, कहां रहते हो । उसने जमींदार का पता दिया । अब पण्डित जी भी रात को ठहरने के लिए वहां गए । दूसरे दिन प्रातः जब लालाकार वापिस लौटने लगा तो इस मित्र जमींदार से इसी नौकर को अपने साथ ले जाने और अपना नौकर रखने की बात चीत की । उसने यह सब मान लिया क्योंकि वास्तव में ज़मीदार नौकर (मीशा साहब) के गुणों से अपरिचित था । अतः लालाकार इस सेवक को साथ लेकर श्रीनगर की

ओर चल पड़ा । लालाकार इस बालक के रहस्य को भांपने गया था । इस लिए कुछ दूर चल कर वह घोड़ें से उतरा और मीशा साहिब को चढ़ने के लिए कहा । उन्होंने न माना । लालाकार ने उसकी सच्चाई की ओर संकेत किया और फिर दोनों पैदल ही चल पड़े । श्रीनगर पहुंच कर मीशा साहिब को घर में तपस्या के लिए अलग एक कमरा दिया और इस प्रकार दोनों में प्रेम बढ़ता गया । घर में ही ठहरे रहने के कारण उनकी वास्तविक्ता लोगों के सामने नहीं आई अपितु कृष्णकार साहिब के जीवन काल में यह बात प्रसिद्ध हुई ।

कृष्णकार की जन्म कथा

मीशा साहिब दिन रात अपनी तपस्या में लीन रहते थे। लालाकार और उसकी पत्नी इनकी सेवा बराबर करते रहे। लालाकार का पुत्र न था इस प्रकार एक दिन उन्होंने अपनी यह इच्छा मीशा साहिब के सामने प्रकट की। वे तो पति पत्नी की सेवा से प्रसन्न हुए थे। इस कारण से उन्होंने इनकी प्रार्थना स्वीकार की और लालाकार के घर में एक सुपुत्र ने जन्म लिया। माता पिता काफी हर्षित हुए तथा बेटे का नाम कृष्णकार रखा। कुछ देर के पश्चात् लालाकार स्वर्गवास हो गए। इस शोक पर उनकी पत्नी मीशा साहिब से प्रार्थना करने लगी कि उनका लड़का यज्ञोपवीत के बिना है। इसलिए वह अपने पिता के क्रिया कर्म करने के योग्य नहीं थे। यह सब सुनकर मीशा साहब ने थोड़ा पानी लालकार के शरीर पर छिड़क दिया और वह पुनः जीवित हुए। सारे परिवार में असीम प्रसन्नता हुई और मीशा साहिब की महिमा की चर्चा घर घर में होने लगी। लालकार फिर 20 वर्ष तक जीवित रहा इस समय के बीच कृष्णाकार का यज्ञोपवीत और विवाह संस्कार सब किया गया। कृष्णकार मीशा साहिब का शिष्य बन गया और गुरू भी बहुत प्रेम तथा स्नेह से शिष्य की देखभाल करता रहा। आखिर में निश्चित समय पर लालाकार का देहान्त हो गया। इसके बाद मीशा साहिब नदी के किनारे पर तपस्या करने लगा

लोग दर्शनों के लिए आने लगे। एक दिन सामान से भरी हुई एक किश्ती शालमार से गुजर रही थी और मीशा साहब के समीप पहुंचकर ही रूक गई। हांजी बहुत जोर से खींचते रहे परन्तु कुछ फल न हुआ अन्त में वे सन्त मीशा साहिब से विनती करने लगे तो आपने कहा कि बोलो 'मीशा पादशाह' यह कहते ही नौका निकल पड़ी अब साधारण लोगों को भी आपकी फकीरी का सही परिचय होने लगा। मीशा साहिब आध्यात्मिक शक्ति स्तम्भ। तथा उच्च कोटि के सन्त थे। मीशा साहिब के बाद उस मुहल्ले का नाम मीशा महला पड़ गया जहां वह रहते थे उनकी समाधि पर एक मस्जिद बनाई गई जहां प्रत्येक वर्ष मेला लगता है। यहाँ पर हिन्दू-मुस्लिम दोनों श्रृद्धाजली भेंट करते है। कृष्णकार साहिब मस्ताना ढंग से रमण किया करते थे। प्रायः हारी पर्वत देवी के चरणों में परिक्रमा करते थे। आप कवि भी थे श्री शारिका भगवती की स्तुति आपने फारसी भाषा में ऐसे की है कि भगवती का जीती-जागती तस्वीर सन्मुख प्रतीत होती है। इस स्तुति को पढ़ कर भक्ति और ज्ञान प्राप्त होता है। यद्यपि आजकल फारसी जानने वाले बहुत कम हैं फिर भी कुछ पद्यांश नीचे प्रस्तुत किए जाते हैं :—

श्री कृष्णाकार की फारसी कविता में देवी की स्तुति

बन्दे शिलातन ईश्वरी श्री शारिका देवी नमः मेहरे चरीचर ईश्वरी श्रीशारिका देवी नेः नूरे जहाने सुन्दरी ता बन्दह मेहरे अनवरीः माहे फरोज़ा अक्षतरी श्री शारिका देवी नमः देवी जगत् माता तुई शिव शक्ति गुरू दाता तुई माता पिता तुई भ्राता तुई श्री शारिका देवी नम। ज़ाहिर तुई बातिन तुई हाजिर तुई नाजिर तुई अवल तुई आखिर तुई श्री शारिका देवी नमः अज़ हर कारन बरतरी दर दर दु आलम सरवरी बर फर्क अन्द्र अफसरी श्री शारिका देवी नमः जग रा सरो सामान तुई शाले शाहशांहां तुई जिस से जहरा जाहा दिहीं श्री शारिका देवी नमः लक्षमी जहां आराइतू मायि विशान अफजा तुई बुध्यी महा विध्या तुई श्री शारिका देवी नमः गर्दे रहत किलते बशर खाके जरत नूरे कमर संग स्मेत खिश्ति जर श्री शारिका देवी नमः तू चारदह रत्ने गरा तू नो निदाने वेकारां तू कानि गौहर शुद अयां श्री शारिका देवी नमः ही इशट देवे शारिका दासे तु केहत्र कृष्णकार गोयद तुता जोयद दया श्री शारिका देवी नमः 11 आप उच्चिकोटि के साधु थे और लोग आप का काफी आदर करते थे ऋषि पीर साहिब के आप गुरू महाराज भी ठहरे है, जिसका संक्षिप्त वर्णन पहले किया गया है। हैरानी की बात है कि किसी सज्जन ने आजतक आपका (पीर साहब)

जीवन चरित्र नहीं लिखा है। इसी लिए आपके विषय में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है। आपका और आपके गुरुदेव का आश्रम आपके ही मकान में था जो अभी तक मौजूद है। मकान के चारों ओर बाग भी है। साड़े तीन सौ वर्ष लगातार मकान प्रयोग में लाने पर भी प्राकृतिक परिवर्तनों का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इसी मकान के एक कमरे में आप का और पीर साहिब का दस्ती चित्र मौजूद हैं। आप नंगे शरीर कन्दों पर जलता हुआ अग्नि वर्तन रखते थे। दुख की बात है कि आप के पुत्र या सेवकों ने आपका दिवस मनाने का भी कोई दिन नियुक्त नहीं किया है, जिस प्रकार दूसरे महर्षियों का दिवस मनाया जाता है यह लेखक के 1960 ई.वीं की घटना है। आपके वंश में इस समय श्री गोपी नाथ कार दामूदर कार इत्यादि मौजूद है। आप को मेरा नमस्कार है।

"पीर साहिब के चमत्कार"

यों तो आपके चमत्कार अनगिन्त हैं । फिर भी ईश्वर भक्ति और श्रद्धा बडाने के लिए कुछ चमत्कारों का वर्णन यहाँ पर किया जाता है ।।

(पुत्र) रिह्ममन्द का जन्म

यद्यपि आप गृहस्थी थे, तथापि आप संसारिक झंझटों तथा बन्धनों से मुक्त थे। एक दिन आपकी माता जी ने अपनी वृद्धावस्था की चर्चा की और इस कारण से आपके यहाँ सन्तान होने की आवश्यकता प्रकट करने लगी। आपने उत्तर दिया कि एक त्यागी को सन्तान की क्या आवश्यकता है। यह सब चीजें तपस्या में बाधा डालती हैं। इस वाद विवाद के दौरान में ही आपके गुरु श्री कृष्णाकार साहिब वहाँ पहुंच गए। वे आपका साहस और दृढ़ता देखकर प्रसन्न हुए, किन्तु आपकी माता के मन का अभिप्राय समझ कर वे बोले कि माता पिता की आज्ञा मानना बेटे का कर्तव्य है। गुरु के इन शब्दों पर आपने फिर माता जी की आज्ञा मान कर उनकी इच्छा की स्वीकृति प्रकट की। माता अत्यन्त प्रसन्न हुई। थोड़ी देर के पश्चात् कार साहिब चल पड़े।

कुछ समय पश्चात् शुभ दिन पर माता जी ने अपनी बहू को पवित्रता के साथ आपके कमरे में जाने की आज्ञा दी। आपकी पत्नी अपने को सरहाने लगी। अन्धेरी रात थी कमरे में पहुंच कर वह उसने एक अचम्भा देखा कि आपका कमरा अध्यात्मिक प्रकाश से चमक रहा था और आपके शरीर के सभी अंग ढीले हो गए थे, और इस तरह कई और दृश्य सामने आए। इन दृश्यों से उसका दिल भयभीत हो गया।

वह यह सहन न करके भाग निकली । उसके दिल में कई तरह के विचार आने लगे तथा वह अपने को दोषी ठहराने लगी । परन्तु आप उनके विचारों से अपरिचित नहीं थे । सारी रात इसी चिन्ता में बीत गई । अपने समय पर आप उठ खड़े हुए और अपनी पत्नी को पुकारने लगे । ज्यूँही उसने आपको स्वस्थ अवस्था में देखा त्यूँही उनका दिल ठिकाने लगा और प्रसन्न हुई । दूसरे दिन प्रातः जब माता जी ने आप से पूछा कि आपके कमरे में रात को कौन था तो आपने उत्तर दिया कि बिना धर्म पत्नी के और कोई न था । आगे निश्चित समय के बाद सन्तान न जन्म लिया । आपकी माता अति हर्षित हुई । रीति अनुसार उनका नामाकरण किया और उनका नाम रिहानन्द रखा गया । परन्तु दुर्भाग्य से बच्चे की मां का स्वर्गवास हो गया । फिर आप ने बच्चों को पालने के लिए एक मुसलमान के घर दाछी ग्राम भेजा शायद वह आप का सेवक था वहां वह 16 वर्ष तक पाला गया ।

आपकी माता ने गंगा-अष्ट्मी पर गंगा जी जाने की इच्छा प्रकट की आपने उत्तर दिया कि तुम इस वृद्धावस्था में जा नहीं सकती अतः यदि विश्वास हो तो मैं गंगा जी को यहाँ आने की प्रार्थना करूँगा, किन्तु माता जी को पूर्ण विश्वास नही हुआ । फिर आपने यह सुझाव दिया कि हमारे पुरोहित गंगा जी जा रहे है इसलिए कोई विशेष वस्तु गंगाजल में डालने के लिए उनके हाथ दे देना । माताजी ने यह बात मान ली । फिर अपनी एक सोने का कड़ा उस के हाथ में दे दिया

अष्‍मी के दिन जब गंगा स्नान का समय आ पहुंचा तो आपने माता जी से वितस्ता नदी बटयार घाट पर स्नान करने को कहा । वह फिर कई नारियों के साथ चल पड़ी और पानी में उतरी तो पानी से एक हाथ प्रकट हुआ जिस में वह सोने का कड़ा था । माताजी ने कड़े को हाथ में ले लिया । स्नान करके घर आई सब नर नारी अत्यंत प्रसन्न हुए और आपकी सराहना की ।

आपकी माता जी का देहान्त

कुछ समय के बाद आपकी माता अत्यन्त अस्वस्थ होने के कारण परलोक सिधार गई । आपने माता जी की जुदाई काफी महसूस की । वे कठिनाइयाँ याद आई जो उन्होंने आप को पालने में उठाई थी । इसलिए माता की स्वर्ग प्राप्ति के लिए 14 1/2 वर्ष की तपस्या का फल उनके अर्पण किया, फिर भी मर्यादा को रखने के लिए उनका क्रिया कर्म किया । उनके दसवें दिन पर आप के गुरू महाराज भी आ गये । उन्होंने आपसे कहा कि चौदह वर्ष का फल तो अर्पण कर चुके हो अब और तपस्या करनी पड़ेगी नहीं तो खाली हाथ जाओगे । इस पर आपने फिर 14 वर्ष तपस्या करनी आरम्भ की ॥

तपस्या का दूसरा दौर

आपने फिर ऐसी कठिन तपस्या की कि खाना पीना भी छोड़ दिया और केवल दूध और पानी पर ही सन्तोष किया जिस के कारण आप का शरीर दुर्बल हो गया । टांगे तथा पांव चलने फिरने के योग्य नहीं रहे । फलस्वरूप मनुष्य क्या देवता भी चकित हुए । जब चौदह वर्ष समाप्त हुए तो गुरू देव प्रकट हुए । आपकी प्रशंसा की और अति प्रसन्न हुए । स्वयं आपको नए कपड़े पहनाकर गद्दी (सिहासन) पर बिठाया उसी दिन से आप पीर पण्डित पादशाह के नाम से प्रसिद्ध हुए और बड़ी बड़ी करामाते करने लगे और आपके सैंकड़ों सेवक बन गए ॥

पुत्र रिहान्द का यज्ञोपवीत संस्कार

कुछ समय के पश्चात् एक दिन यज्ञोपवीत धारण करके एक बालक नियाज़ लेकर आपके पास आया इसको देखकर आपको अपने सन्तान की याद आई । तथा उनके यज्ञोपवीत संस्कार का विचार आया । शीघ्र ही आपने सेवक नानशाह को बाताया और पुत्र रिहान्द को दाछीग्राम से लाने की आज्ञा दी । उसने दाछी ग्राम से लाकर बालक को उपस्थित किया । अब यज्ञोपवीत संस्कार का प्रबन्ध आरम्भ होने लगा । कुछ

ब्राह्मण देवताओं ने इस बालक का मुसलमान घर में पालन होने के कारण अप्रसन्नता प्रकट की। इस अलोचना को सुनकर आपने नानशाह को आदेश दिया कि इस लड़के की पीठ पर तीनबार छड़ी से खरमं लगा दो। आज्ञा अनुसार सेवक ने ऐसा किया तो बालक के शरीर के तीन भाग भिन्न-भिन्न हुए। फिर आपने आज्ञा दी कि इन भागो को वितस्ता नदी में फेंक आओं फिर बालक को नाम से पुकारो। नानशाह ने ऐसा ही किया तो क्या हुआ बालक वास्तविक रूप में पुनः प्रकट हुआ। फिर नए कपड़े पहनाकर उनको आपके सामने उपस्थित किया गया। पिता ने पुत्र का मुख चूम लिया और उस का चेहरा चन्द्रमा जैसा मुखड़ा बन गया। उनके बाद अलोचक ब्राह्मणों से फिर पूछा कि क्या रिहानन्द यज्ञोपवीत संस्कार के योग्य हो गया। सारे लोग जब आपकी आत्मशक्ति को देखकर दंग रह गये। और ब्राह्मण लज्जित हुए। बाद में धर्म पूर्वक और कुल रीति से रिहानन्द का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया

पुत्र रिहानन्द की शिक्षा व विवाह

चूंकि रिहानन्द को दाछी-गांव में शिक्षा प्राप्त हो न सकीं इसलिए शुभ मुहूर्त पर इसकी विद्या आरम्भ की गयी। थोड़े वर्षों में ही उसने विद्या प्राप्त की और उनके उपरान्त उनके विवाह के बारे में विचार होने लगा। एक दिन कोई अच्छे परिवार का एक सज्ञन आपके पास उपस्थित हुआ और उसने

अपनी बेटी का विवाह आपके लड़के से कराने के सम्बन्ध में प्रार्थना की। उनके साथ ही अपनी गरीबी तथा दीन दशा का वर्णन किया। उसकी यह दशा सामाजिक कुरीतियों से हुई थी। इन हालात को सुनकर आपने उसे तसल्ली दी और कहा कि यदि तुम मेरे बेटे के साथ नाता जोड़ने में कोई बुराई न समझोगे तो तुम समाज की बुरी रीतियों तथा अधिक व्यय करने से मुक्त हो जाओगें। पण्डित जी ने इस पर अपनी स्वीकृति के साथ धन्यवाद भी किया। अब शुभ कार्य का प्रबन्ध होने लगा। निश्चित दिन पर बारात धूम धाम से निकली और बरात में दो हज़ार बराती लिए गये। लड़की वाले के घर जब बारात पहुंच गई तो बारातियों की गिनती को देख कर लड़की का पिता घबरा गया और कहीं छिप बैठा। आपसे यह सब कुछ छिपा तो न था, इसलिए आप ने लड़की वाले को बुलाकर तसल्ली दी और यह उपदेश दिया कि रसोई में कोई बर्तन ढ़कने के बिना रहने न पाए। और सभी बारातियों को भोजन देने से पहले मेरे लिए भोजन भेज दिया जाये आप की आज्ञानुसार लड़की वाले ने ऐसा ही किया। सारे बाराती प्रसन्न होकर भोजन खा चुके परन्तु फिर भी कई बर्तन खाने से भरे पड़े रहें। लड़की वाले को यह देख कर बड़ा आश्चर्य और प्रसन्नता हुई। लगन कार्य भी सिद्ध हुआ और अन्त में सभी बारातियों समेत आप घर लौट आए और बाजे बजने लगे।

आग की घटना

आपके शिष्यों ने 14 पैसे का जो चढ़ावा नियुक्त किया था वह कई लोगों को बोझ मालूम होने लगा । कई शिष्य यह देना भी भूल गये । लापरवाही यहाँ तक हुई कि कई लोगों ने चढ़ावा के बदले अफीम के गोले दिये । जिस के खाने से आप को गर्मी पैदा हुई । किसी सज्ञन ने दूध का प्याला दिया । इस अनादर का परिणाम यह निकला कि अचानक शहर में आग लग गई । आलीकदल जैनाकदल, बोरही कदल और जमिया मस्जिद तक करीबन दो हजार मकान राख हो गए । इन मकानों में केवल उसी का मकान बचा रहा जिसने आप को दूध पिलाया था । जब आग फैलती गई तो कई लोग आप के पास आकर विनती करने लगे और यूं प्रार्थना करने लगे कि आप कुछ सहायता करें क्योंकि आप का नाम 'मुश्किल आसान' पड़ गया है । अन्त में आप ने अपनी खडाऊं का एक पांव देकर इसको अग्नि में डालने की आज्ञा दी । लोगों ने आदेश का पालन किया और अग्नि शान्त हो गई । इस चमत्कार को देख कर लोगों में आपका काफी विश्वास और प्रेम बढ़ने लगा । यह घटना तब हुई जब काश्मीर का गवर्नर इफतियार खां था ।

"नाव की यात्रा"

एक दिन आप शिष्यों के साथ नाव में बैठकर नूर बाग

की ओर सैर करने को चले गए। एक सप्ताह के बाद आप के आश्रम की ओर लोटते समय एक शिष्य नींद में मस्त सोने के कारण नाव में न आ सका न दूसरे शष्यों को उस का ध्यान रहा। जब वह शिष्य जाग पड़ा और अपने को अकेले पाया उसने नदी पारं करने के लिए नाव की तलाश की परन्तु वहां पर कोई नाव न थी। फिर क्या हुआ कि शाहि नूरबाग अपने प्रयोजन पूर्ति (मारने) के लिए मल्लाह बन का इस शिष्य के पास नाव लेकर आया। नाव में उतरते समय शिष्य ने आपका नाम लिया। यह सुनकर शहिनूर बाग सहम सा गया और अपने प्रयोजना को हल करने में असमर्थ रहा। इतना ही नहीं अपितु आपके मान के लिए नाव को पास पहुंचाया। आपके शिष्य को आश्रम तक पहुंचाने का भी प्रबन्ध करने लगा। इतने में आप के दूसरे शिष्यों ने जो इसकी खोज में निकले थे, शाहिनूर बाग को शिष्य के साथ आते देख लिया। यह अपने दूसरे शिष्यों के शिष्य साथ वापिस आया। सेवक आपकी इस शक्ति को देखकर चकित रहे।

"एक मुस्लमान व्यापारी को तूफान से आजादी"

एक मुस्लमान व्यापारी अपना माल नाव द्वारा श्रीनगर ला रहा था। चलते चलते नदी में अचानक तूफान आया और नाव डूबने लगी। व्यापारी काफी निराश हुआ था। इस कठिन समय में वह प्रत्येक सन्त और फकीर का नाम लेनें लगा और चढ़ावा देने का वचन भी देता रहा परन्तु कोई सहायता न कर

सका । अन्त में आप का नाम लिया तथा भेंट चढ़ाने का वचन भी मन में ही दिया । आपके स्मरण करने पर ही तूफान रूक गया और नाव चल पड़ी । इसके बाद कुछ समय तक व्यापारी भेंट चढ़ाना भूल गया आखिर कुछ देर बाद उसे स्मरण हो गया । फिर वह आपके के पास आकर क्षमा याचना करने लगा और वचन भी पूरा किया । आगे चल कर वह अन्य शिष्यों की तरह आपकी सेवा करने लगा ।

"जहूरद्धीन नामक एक मुस्लमान की लड़की को सन्तान प्राप्ति"

सफाकदल के जहूरद्धीन नामक एक मुस्लमान की लड़की विवाहित थी । काफी समय तक उनको कोई सन्तान न हुई। जियारतों और फकीरों के पास जाकर भी मनोरथ सिद्ध न कर सकी । अन्त में आपके पास आकर साविन्य अपनी मनोकामना प्रकट की । वह वास्तव में नेक और पवित्र थी । आपने उसका ढ़ाढ़स बन्धाया और यह शर्त रख दी कि यदि वह अपने सारे आभूषण वितस्ता नदी में फेंक देंगी तो सन्तान प्राप्त होगी । उसने आज्ञा स्वीकार की । घर पहुंच कर ऐसी ही किया आखिर में वह पुत्रवती हुई, परन्तु बालक एक आंख से काना था । अब वह पछताती रोती आपके पास आई और कहने लगी कि आपने दया अवश्य की लेकिन अपूर्ण । आपने उत्तर दिया कि तुमने मूल्यवान वस्तु को सन्तान से अधिक प्रिय समझा इसलिए खुदा (भगवान) ने भी बच्चे को एक आँख की रोशनी न दी तुम यह न समझो कि घर में छिपाने से वह

नहीं देखता । इस पर उसने आपसे सविनय क्षमा की प्रार्थना की । फिर आप ने कहा कि जब तुम उसी छिपाये हुए आभूषण को नदी के अर्पण करोगी तो तब ही बालक के नेत्र को रोशनी आयेगी । वह फूले न समाई उसने वैसा ही कियण । और बालक की दूसरी आँख में रोशनी आ गई और आपका आदर बड़ने लगा ।

"बाजार की सैर"

एक दिन आप की पालकी में सवार होकर कई शिष्यों के साथ बाज़ार की सैर को निकले । उसी दिन गर्वनर काशमीर सैफखान का एक मस्त हाथी आपे से बाहर हो गया था और बाजार में काफी शोर मचा हुआ था । जब आपके कहारों ने भी इस हाथी को देखा तो भयभीत होने के कारण उन्होंने आपकी पालकी सड़क पर ही रख ली और स्वयं भाग निकले। उनको इस अवसर पर आपका संत भाव और अध्यात्मिक शक्ति का ध्यान न रहा । अन्त में जब यह पागल हाथी आप के पास आ पहुंचा तो वह अपना सिर झुकाकर सामने ठहर गया । आपने उनके सूँड़ पर अपना हाथ फेर लिया और हाथी के होश ठिकाने लग गए । जब महावत् ने यह सब देखा तो वह चकित रह गया । फिर वह समाचार गवर्नर तक भी पहुंचा। वह प्रसन्न होकर स्वयं भेंट चढ़ाने के लिए उपस्थित हुआ । उन्होंने आपकी आध्यात्मिक शक्ति की काफी प्रशंसा की और लौट गये ।

श्री रूप भवानी के दर्शन होना

आपके जीवन काल में श्री माधव जू दर जो एक महान साधु थे, उनके घर में रूपभावनी का जन्म हुआ था। इस की कथा सन्तमाला में आ चुकी है। एक बार वह आपके आश्रम पर आई। आप इस समय (श्री पचंमो) के काम में व्यस्त थे। उसे पहचान न सके और उसे भी रीति के अनुसार चावल के फूल दिए। इस पर श्री रूपभवानी ने काश्मीरी में कहा "आखिर द्राक लाय गरू" अर्थात् चावल के फूल बेच ने वाला। आपस में कुछ वाद विवाद भी हुआ। अन्त में आप समझ गए और उनसे क्षमा मांगी। फिर वह सेवकों समेत विदा हुई ।।

मुल्लां आखून शाह का वृतांत

मूल्लां अखून शाह नामक एक जादूगर उन दिनों हारी पर्वत के दक्षिण में रहता था जो कि प्रायः साधु भेष ही धारण करता था उनके मकान के खण्डरात अब भी मौजूद है, उसकी जादूगरनी में बहुत बड़े कमालात थे उनके निवास स्थान के नज़दीक एक तलाब बनाया था जिसे आबिजलाल कहते थे। इस जल में ऐसा प्रभाव था कि वह कोई कठिन से कठिन कार्य आसान बनाता था। लोग इस की जादूगरी से अपरिचित थे। कहा जाता है कि वह इस जादूगरी के बल से पंजाब के

एक धना डय सेठ की सुन्दर लड़की को प्रतिरात्रि यहाँ अपने मकान में अपना मुंह काला करने के लिए लाता था ।। कई महीने इसी तरह गुज़र गए वह बात किसी तरह प्रकट न हुई। कुछ समय के बाद लड़की गर्भवती हो गई । उनके माता पिता को बहुत चिन्ता हुई और विवश होकर उन्होंने लड़की से पूछ ताछ की । पहले वह लज्जा के कारण चुप रही । किन्तु माता पिता के आग्रह करने पर उसने सारा वृतान्त कह सुनाया ।। माता पिता और सम्बन्धी आश्चर्य में पड़ गए । करें तो क्या करें निःसहाय थे । उन्होंने लड़की से पूछा कि क्या उस देश का स्थान का कुछ पता है जहाँ वह तुझे रात को ले जाया करता है । परन्तु उस विचारी को कुछ ज्ञान न था । अन्धेरी रात में उनको कुछ पता न चलता था । इस पर माता पिता ने कहा कि तुम उस स्थान का विशेष फल या वस्तु उससे मांगलो । दूसरे दिन वह अपने साथ बादाम वृक्ष की एक टहनी फल सहित ले आई । सोच विचार करने पर यह अनुमान लगाया गया कि यह काश्मीर का फल है । उनके बाद उन्होंने देहली के महाराजा औरंगजेब तक यह समाचार पहुंचाया । वह इसलाम धर्म का पक्का था । उनको इस बात का क्रोध आया। एकदम गर्वनर काश्मीर को आदेश भेजा कि वह सभी जादूगरों को देहली भेज दे सैफखान यहाँ का पर गर्वनर था। वह इस के खोज में लग गया । उस समय आपके सिवाय यहा और कोई प्रसिद्ध सामर्थ्य वाला संत नहीं था । उसने संत और जादूगर की पहचान न करके आप को ही देहली भेज

दिया । इस बीच में मुल्लां आखून शाह ने आप को निमन्त्रण भी दिया ।

आपको आखून शाह का निमन्त्रण

आखून शाह को आपकी दिव्यशक्ति और चमत्कारों का कांटा खटकता था । उनके मन में बैर भाव उत्पन्न हुआ था। उनके अतिरिक्त वह आपके गुणों से पराजित भी हुआ था जिस का उसे ईदगाह के मैदान में महात्माओं की सभाओं में व्यहारिक अनुभव हुआ था । ईदगाह में यह सभा प्रायः लगती थी जिसमें आखून शाह भी उपस्थित होता था । परन्तु सब लोगों में आप की आध्यात्मिक शक्ति ऊँची थी । इन कारणों से आखून शाह आपसे बदला लेना चाहता था । इस प्रकार एक दिन उसने आपको निमंत्रण दिया क्योंकि आप किसी के निमंत्रण को ठुकराते नहीं थे । इसलिए आपने उसका निमंत्रण स्वीकार किया परन्तु निम्नलिखित शर्तो पर :—

1. निमंत्रण में प्रयोग होने वाली वस्तुयें सफाई शुद्धता और पवित्रता से तैयार की जाये ।

2. प्रत्येक वस्तु सम्पूर्ण होनी चाहिएं और झूठा न किया जाए जैसे भेड़, मुरगा, आलू इत्यादि... इनके सभी अंग मौजूद होने चाहिये ।

3. 1250 मूर्तियों के लिए भोजन बनाना चाहिए ।

4. एक ही समय पर सभी थालियाँ ढकनों समेत सभी

मूर्तियों के सामने रखी जानी चाहिए ।

ये सब शर्ते मुल्ला आखून शाह ने बड़े अभिमान के साथ स्वीकार की, साथ ही 1250 हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन कराने की आशा भी मन में रख ली । प्रबन्ध अनुसार उस ने एक बड़ा हाल सजाया और सभी पदार्थों को तैयार किया । निश्चित समय पर जब आप शिष्यों समेत पधारे तो आखून शाह ने पहले फारसी भाषा में इन शब्दों से आपका स्वागत किया ।

मुल्ला आखून शाह ने फारसी कविता में कहा--

इमरोज शाहि शाहां मेंहमान शुध्न अस्त मारा जबरील व मलाइख दूरवां शुद अस्त मारा ।

अर्थ- आर राजाधि राज मेरे अतिथि हुए हैं और महाराज अपने अधीन देवताओं के समेत आपके सन्तरी बने हैं ।

आपने भी फारसी कविता में उत्तर दिया ।

दरबार वाडि वहदत कसरत चिकार आयद हशत दह हजार आलम यंकता शुद्ध अस्त मारा ।दर खलवते गद्‌दायां मज़िल कुजा व गुलजार बेबज्म व नवाई सामान शुद्ध अस्त मारा । बुतखानए जहाँ रा विस्यार सैर करदम । आईनि खुद परस्ती ईमां शुद्ध अस्त मारा ।

अर्थ– इस संसार के बड़े फैलाव में भगवान का चमत्कार एक ही है । इसी तरह मेरे पास आठरह हज़ार भवन एक समान है । संसार से न्यारे ईश्वर के प्यारे भक्तों को फुलवाड़ियों से क्या प्रयोजन है । एकान्त और वेराग्य ही, मेरी जीवन सामग्री बनी है । मैं संसार के सारे तीर्थों, शिवालयों तथा

जियारतगाहों की सैर कर चुका हूँ अन्त में अपने शरीर के भीतर ही आत्म ज्ञान आया । वही उनके मिलने का कारण बना ।। आपके ज्ञान वाक्य सुनकर अखून शाह प्रसन्न हुआ । आदेश अनुसार खाना ढकनों समेत चादरों पर लाया गया । आपके शिष्यों में शंका के कारण काना फूसी होने लगी कि क्या पीर साहिब यह भोजन ग्रहण करेंगे । आपकी आत्मशक्ति तो पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी थी । पहले तो आपने वही आविजुलाज मंगवाया और उसे प्रभाव रहित कर दिया । उनके बाद एक चुल्लू भर पानी उठाकर सभी भोजन से भरे हुए बर्तनों पर छिड़क दिया । फल स्वरूप ऐसा चमत्कार हुआ कि सारे पदार्थ वास्तविक रूप में आ गये मुर्गे और भेड़ जीवित होकर चलने लगे । केवल एक मुर्गा एक टांग से लगड़ा रहा। मुर्गे की टांग एक कम होने पर आपने क्रोध से बोला कि इसकी दूसरी टांग तुरन्त सामने लाओ वरना अपनी टांग आपको देनी होगी । खेद की बात यह है कि कोई अभागा रसोइया इस टांग को चख चुका था मुल्ला ओखून शाह लज्जित हुआ। रसोइये को दरबार में उपस्थित किया गया और वह हाथ जोड़ कर क्षमा याचना करने लगा आप के दयालु होने के कारण उनको माफ किया और मुर्गे की टांग ठीक हो गई ।

अन्त में आखून शाह से कहा कि यह पकवान झूठा होने के कारण अस्वीकार हुआ सारे आमन्त्रित व्यक्ति आश्चर्य में पड़ गए और अपना शीष आपके चरणों पर झुकाया । फिर सभी आश्रम की ओर लोटे । इस चमत्कार की चर्चा श्रीनगर तथा काश्मीर के अन्य भागों में होने लगी ।

औरंगजेब की और से देहली आने की न्योता

गर्वनर काश्मीर कुछ समय तक जादूगरों की तलाश में था किन्तु कुछ प्रतिष्ठित पुरुषों के कारण आखूनशाह की जादूगरी का रहस्य गर्वनर के ध्यान में नहीं आया, अपितु आपके सम्बन्ध में ही शंका प्रकट की गई । अतः गर्वनर ने आप का नाम अपने पत्र के समेत देहली भेज दिया था पत्र का विषय फारसी कविता में इस प्रकार लिखा गया था

मुखत्सर पत्र गर्वनर काशमीर की ओर से महाराज औरंगजेब के नाम:-

सेफखान विनवीसत शाहेहन्द रा किए शिहरयार-

हसत दर काशीसीर हिन्दोएं कस ज़ीफ व नजार ।

दस्त व पायश नेस्त तखतश अफसरों वर सर बिरून्द ।

सरवरां दर सजदह अय शामों सहर वरदरंद ।

ज़ेरि फुरमानश हमह मुलक मलक जिनव परी ।

बाबजोदे नातुवानी बरहमह कस बरतरी ॥

सजा उंगुशतर कुनानीद अस्त खुदरा बादशाह ।

बादशाह नर मुहर हर अतराफ गर्दद बादशाह ।

अर्थ- यहाँ एक हिन्दु है जिसके हाथ पैर बेकार हुए हैं । उसे एक पालकी में बिठा कर सैर करायी जाती है । उच्च

कोटि के लोग तथा गरीब सायं प्रातः बड़े आदर के साथ इसके सामने शीश नवार्ते है । सारे देवताओं, परियों और लोगों में इसकी आज्ञा का पालन होता है । शारीरिक निर्बलता होने पर भी उसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता हैं । हाथ में अंगूठी है शासकीय ढंग से उसकी मुहर लगा कर आदेश जारी करता है और भेंट भी लेता है । जब औरंगजेब ने यह पत्र पढ़ दिया । तो उसने अपनी...... ओर से दो सेवक गर्वनर काश्मीर के पास भेज दिए और उनको आदेश दिया कि ऐसे जादू- गर संत को देहली भेज दिया जाये । इस प्रकार जब यह सेवक काश्मीर पहुंच कर आपके पास राजा की आज्ञा लेकर आए तो अपनी दुर्बलता के कारण आज्ञा पालन में असमर्थता प्रकट की किन्तु सेवक आज्ञा भंग नहीं कर सकते थे । वे उन्हें वहाँ ले जाने की हठ पर स्थिर रहे इस पर आपने एक रात का अवकाश मांगा । फिर यह हुआ कि उसी रात आपको आत्मशक्ति से एक गर्जता हुआ सिंह अधिक पास उपस्थित हुआ । आपने उस पर सवार होकर उसी रात एक घण्टे के अन्दर छलांग मार कर महल में प्रवेश किया और फिर राजा के होश उड़ गये और आपसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि हे कि महाराज आप कौन हैं और कैसे पधारे हैं । इस पर आप ने (पीर साहिब) उसी का लिखा पत्र औरंगजेब को दिखाया जिसके अनुसार राजा चकित हुआ । और सोच समझ कर विनती की कि हे महाराज आप शेर को वहां रख कर गद्दी पर विराजमान होकर कहें जो कुछ आपने कहा है । मैं शेर से डरता हूं। खैर

आपने ऐसा ही किया और फारसी पद्यों में कहने लगे ।

फारसी कविता में पीर साहिब का जबावः-

कीसती पा सालिकाने राहि मैंने दम जानी ।

चीतत तदवीरे तु किया मद तुरन्त वक्ते जांकनी ॥

गुरतुरा जोरे स्त दर बाजू बियाहम पंजह शेव ।

दानह आज सर पंजह शेरे अजल खुद रंजह शैव ॥

चस्ति नेरोए तु खाही पीरपंडित पादशाह ।

बादशाह हरदु आलम खुद मनस वा मन तुरा ॥

अर्थ- क्या तुम्हें ईश्वर भक्तों के साथ छेड़ने की शक्ति है। इस समय तेरा अन्तिम समय आया है इसलिए बचने का उपाय करो । यदि मुकाबला करने की शक्ति है तो इस सिहं रूपी मृत्यु को परख लो । इसी से तेरा अन्त होगा । हां अगर मैं बादशाह कहलाता हूँ । तो इससे तेरा क्या मतलब है फिर औरंगजेब ने उत्तर दिया ।

औरंगजेब ने फारसी कविता मैं क्षमा मांगी:-

ताज वखयी कुन शहा वर गुलामे वद कमाश ।

देह बराते जो वचंगम कुन दरंग अन्दर खराश ॥

वरसरे उगश्त खुद अज नोकि कजलक र्जव दाद ॥

कत्ररए खुनम चकीदा दरमदा और दाद मदाद ॥

गुफतश आलमगीर ए मिहरे सिपहरे ए तिला ।

वर खतयाम खत कशकश बरसर विनेह दस्ते अता ॥

है महाराज आप मुझ कुकर्मी, अधर्मी नौकर को जीवन दान देकर क्षमा करे। फिर राजा ने अंगुली काट कर रक्त से नया आदेश लिखा जिसके अनुसार पिछला आदेश निर्थरक ठहराया गया और गलती के लिए क्षमा मांगी गई साथ ही आपको (पीर साहबि) पीर पंडित बादशाह को जहां मुश्किल आसान की पदवी दी। दूसरे आदेश गर्वनर कापूमीर को भेजा गया जिस में उससे गलत समाचार अथवा नाम भेजने के लिए फटकारा गया कि तुरन्त वह निश्चित भेंट लेकर के आपके पास उपस्थिति होकर क्षमा मांगे वादशाह औरंगजेब को आपकी आत्मशक्ति देख कर आप के लिये श्रद्धा पैदा हुई इसलिए उसने आगे फिर सविन्य प्रार्थना की कि आप अब मेरे (औरंगजेब) गुरु हैं। अतः मेरी एक और प्रार्थन स्वीकार कीजिए वह यह है कि कुछ समय से मुझे (औरंगजेब) प्रत्येक खाद्य पदार्थ में रक्त दखाई देता है जिस कारण से मैं कुछ खा नहीं सकता और गूंगा होता जाता है। पाचन शक्ति भी अब कमज़ोर होती जा रही हैं। इसका यह कृपया इलाज बता दीजिए।

यह सु नकर आपने उत्तर दिया कि यह सब सरमद नामक संत जी निरपराध हत्या करने का फल है। खैर ! अब से आप केवल अपने हाथों की कमाई को खाने के प्रयोग में लायें और शासन में समद्धष्टि से काम करें। इन नियमों के पालन से अवश्य कुछ लाभ होगा। इस सम्बन्ध में आगे कुछ उपदेश भी दिया।

पीर साहिब का उत्र चीनी दस्त व रो वर वै मनेह ।
एक तुंनतगर नुमाई गेवते सुसतगर अस्त ॥
गर चिह मिलते मुखतलिफ शुद हेच कस महरूम नेस्त ।
वागवारा दर चमन हर गुल वरंगे दीगर अस्त ॥

अर्थ- किसी को सुन्दरता या बद सूरती पर ध्यान देना या आलोचना करना ईश्वर निन्दा के समान है जिस प्रकार एक माली अपनी फुलवाड़ी में कई प्रकार के फूल उगाता है और पालता है उनको इसी प्रकार राजा भी एक माली के समान होता है । इसके उपरांन्त आप राजा के लिखे शब्द लेकर श्रीनगर लौट आए । दूसरे दिन सुबह पहले भेजे हुए सेवक फिर आये तो आपने उनको रक्त से लिखा हुआ दूसरा आदेश दिखाया यह देख कर चकित होकर भाग निकले । सैफखान गर्वनर कश्मीर भी यह चमत्कार देखकर लज्ञित हुआ । कुछ दिनों के बाद औरंगजेब का भेजा हुआ पत्र भी सैफखान को पहुँच गया। उसमें राजा ने लिखा था कि तुम जादूगर और संत में भेद नहीं कर सके । पीर साहिब हर दो जहां के मालिक है वह अब मेरा भी गुरू हैं । मेरी ओर से स्वयं भेंट लेकर उनके पास उपस्थिति हो जाओ । और साथ ही कुछ गाँव उनको जागीर में दे कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करो ।

आदेश अनुसार सैफखान स्वयं आपके पास भेंट लेकर आया और कुलगाम की तरफ कुछ गांव जागीर में भी दिए सैफखान के पत्र में राजा ने यह शब्द स्वयं फारसी पद्यों में

लिखे थे ।

औरंगजेब का पत्र सेफखान गर्वनर के नाम:

फउलहकीकत पीर पांडित पादशाहे मुलिक मास्त ।

सालकिए सिलके खुदा व मालिक मुलके कजास्त ॥

रौव व खाके आसतानश जब फरसा शाद वाश ।

अज़ सजोदे दरगहश अज बन्दि गम आजाद वाश ॥

अर्थः-सचमुच पीर पंडित बादशाह एक सच्चा ओर परम ईश्वर भक्त हैं । मेरे राज्य पर तथा देवताओं पर पर उनका शासन है इनके आश्रम पर जाकर भेंट दो और चिन्ता की कड़ियों से स्वतन्त्रता पाकर उसकी प्रसन्नता प्राप्त करो ।

इसके बाद सैफखान से गुप्तचरों द्वारा तथा आपके इशारों से सच्चे अथवा असली जादूगरों का पता ढूँढ़ निकाला । उनको यह विश्वास हुआ कि आखूनशाह के सिवाय यहां और कोई नहीं है फिर सैफखान ने लोहे का पिंजरा बनवा कर आखूशांह को बन्दी बना के दिल्ली राजा के पास भेजा । वहां उनको एक कठोर कारागृह में बन्द रखा गया । इसी कारागृह में कुछ समय के बाद उसकी मृत्यु हुई ।

इसके सम्बन्ध में एक और विचार धारा भी है कि जब वह बन्दी बन कर देहली पहुंचा तो एक बार प्यास के बहाने से एक माशकी से अपने ऊपर पानी डलवाया फिर वह अपने जोटू के वल से पिंज़रे से मुक्त होकर भाग निकला और फिर उनका कोई पता न चला ।

मुस्लमान फकीर सरमद की कथा

जिला आगरा में सरमद नाम का एक ईश्वर भक्त हो गुज़रा है। वह साधु और कवि भी था। एक दिन वह राजा के महल के रनवास की ओर से जा रहा था और फारसी के यह शब्द कहता फिर रहा था चहर चीज़ अज़ गम दिल बुरदन्द कुदाम बहार। शराब सबजह व अबरिवां व रोयिनिगर।

अर्थः- मन किन चार चीजों से खेंचा जाता है।

राजा की लड़की जेबु सनिया ने जब ये शब्द सुने तो उसने उत्तर इन शब्दो में दिया -

अर्थ- शराब, हरा घास, बहता जल, प्रेमी का मुख। राजा ने अपनी लड़की के शब्द सुने जिस पर राजा ने लड़की से पूछा कि तुम ने क्या कहा ? चूंकि वह एक अच्छी कवयित्री थी उसने शब्दों में परिवर्तन करके तुरन्त उत्तर दिया—

औरंगजेब के ऐतराज पर जेबुनिसा ने यह कहा :

निमाज रोज़ह व तोवह व इसतिगफार।

अर्थः- 1. निमाज़ 2. रोज़ह 3. रोबारह न करना और 4. क्षमा

अब राजा ने सरमद कलन्दर को इस्लाम की नीति के विरुद्ध नंगा फिरने पर सूली पर चढ़ाने की आज्ञा दी। सूली पर चढ़ते समय सन्त सरमद ने यह कहां —

एदीदह सरां अबल विरोशेद / दर चारह कारि मन

विकोशेद। जानानि मरा वमन वियारेद । मुदहे तनम बदो सुपरारेद । गर वोसह जनंद वदो लवानम । वर....जिन्दह शिवम् अजब मदारेद ।(यह मिसरा जामी शायर ने पूरा किया है)

अर्थः- ऐ नेत्रवान और बुद्धिमान लोगों । मेरे कार्य में यह प्रयत्न अवश्य करें कि इस मृतक शरीर को फिर मेरी प्रेमिका को सौंप दिया जाए । और यदि वह मेरे होठों को चूमेगी तो मुझे पुनः जीवन प्राप्त होने में कोई आश्चर्य नहीं है इसके उपरान्त मन्त्रियों और सभासदों ने राजा को इस बात की पड़ताल करने का परामर्श दिया । औरंगजेब राजा ने परामर्श स्वीकार करके अपनी लड़की को सरमद के होंठ चूमने की आज्ञा दी । परिणाम स्वरूप लड़की के चूमने के तुरन्त बाद सरमद पुनः जीवित हुआ । यह देखकर सभी दर्शक विस्मित हुए । अब से फिर सरमद मस्ताना ढंग से घूमता रहा और फारसी में ये शब्द कहता रहता था ।

आकंस कि तुरा ताज शाहन शाही दाद । मारा हमहा असवावि परेशानी दाद । पूशीदह लिवास हर किरा ऐवहस्त। वे एवां रा लि बासि उरयां दाद ॥

अर्थ- जिस ईश्वर ने तुझे सिंहासन और शासन दिया उसी ने तुझे आवारगी के साधन दिये । उसी ने दोषी के लिए पोशाक बनाया दोषरहित को नंगा फिरना बता दिया ।

राजा बार बार यह सुनकर क्रोधित हुआ और अपने मन्त्रियों की फिर एक बैठक बुलाई । नंगा फिरना इस्लामी

नीति के विरुद्ध होने के कारण उसे फिर सूली पर चढ़ाना बैठक में निश्चित हुआ और सरमद को फिर फांसी दी गई। दूसरी बार फांसी के वक्त सरमद ने कहां कि वारे आदि सवा पैयामे। सरि मन फितादह गिरयों॥ कि शाह दर मुलिक दौलत। मन मुलकि वेनवाई॥

अर्थ :- ऐ वायु के देवता। परमात्मा तक यह समाचार पहुंचा दे कि मेरा गिरा हुआ सिर रो रहा है जब कि राजा धन के देश में डूबा हुआ है। मैं शीष रहित वीरान देश में घूम रहा हूं।

बगदाद के कई सूफियों का आपके दर्शन को आना

कुछ समय के बाद बगदाद के कुछ सूफी औरंगजेब के दरबार में आये वहां कुछ दिन बिता के वे राजा के कहने पर काश्मीर का भ्रमण करने के लिये यहाँ भी आ गए राजा ने उनको कश्मीर में आपसे मिलने के लिये भी कहा था इस प्रकार कश्मीर में आकर सूफी एक दिन आपके पास भी दर्शनों के लिए आए। काफी देर आपसे बात चीत करते रहे। इतने में सूफियों को निमाज़ का समय आया तो वे आपको कुटिया में प्रविष्ट कर निमाज़ पढ़ने लगे। निमाज़ आरम्भ करते ही वहां विषैली मक्खियाँ पैदा हो गई और उन्होंने बुरी तरह काटना आरम्भ किया- निमाज़ पढ़ना तो दूर रहा वे उसी समय भागने लगे। कुटिया से निकल कर आपके चरणों पर शीष

झुकाया । कुछ वाद- विवाद के बाद आपने उनसे कहा कि यह संतो का गृह है ईश्वर का नहीं । इन दोनों में अन्तर है और आप लोग शौच रहित ही दीख पड़ते हैं । इसी कारण से मक्खियां दण्ड देने के अभिप्राय से आई होंगी । आप लोग जाहिद (धर्मात्मा) और सन्त में भेद नहीं कर सके ।

यह चमत्कार देखकर वे लज्रित हुए और कछ दिनों के बाद दिल्ली लौटे । वहां - पहुंच कर राजा को यह सारी कथा सुनाई । राजा तो स्वयं पहिले ही प्रभावित हो चुका था । आखिर में जब सूफी लोग अपने देश को लौट गए तो उन्होंने वहां भी आप की आत्मशक्ति की काफी प्रशंसा की ।

एक तरखान के बेटे को "जीवन दान देना"

एक दिन आपके सेवकों ने आपकी कुटिया की मरम्मत कराने के लिए एक तरखान को काम पर लगाया । काम में हाथ बाटने के लिये तरखान अपने लड़के को भी साथ ले आया था । मरम्मत का काम चल रहा था इसी के बीच तरखान का लड़का गिर कर मर गया बहुत से मुस्लमानों ने आपको ही दोषी ठहराने का प्रयत्न किन्तु और तरखान और उस की पत्नी जार जार रोने लगी । इस पर आपको दया आ गई और आपने कहा कि शायद उसे बेहोशी छा गई हो, मरा नहीं होगा थोड़ी गर्म चाय पिलाकर उसे आवाज मारो तो सही । फिर ऐसा ही किया गया और वह जीवित हुआ । उनके

माता पिता अत्यन्त प्रसन्न हुये । उन्होंने उन लोगों की भी बुराई की जिन्होंने आप पर शंका प्रकट की थी । इस घटना में आपकी ख्याति में और वृद्धि हुई ।

"एक मुस्लमान 'स्त्री को पुत्र का वरदान"

एक मुस्लमान नारी कई वर्षों से बांझ थी उसे इस कारण काफी निराशा हुई थी । मनोरथ सिद्ध करने के लिए वह कई संतों और फकीरों के पास जा चुकी थी । परन्तु कुछ प्राप्त न कर पाई । अन्त में जब उसने आपकी बढ़ाई सुन ली तो एक दिन आपकी शरण में आई । उसने काफी विनती और प्रार्थना की आपने उसे चिल्म में आग रखने का संकेत किया । आज्ञा पाते-पाते इस स्त्री की एक अंगुली जल गई । किन्तु उसने लज्ञा के कारण उफ तक न किया अपितु काफी धीरज से काम लिया । जब आपने यह सब देखा तो आप बड़े प्रसन्न हुये, और स्त्री पर दया करके उसे पुत्रवती होने का वरदान दिया । सन्तान प्राप्त होने पर काफी हर्षित हो गई और फिर आपकी सेविका भी बन गई ।

"नानशाह सेवक के माता का देहान्त और उसे फिर जीवन दान देना"

कुछ समय के बाद आपके सेवक नानशाह की माता की मृत्यु हुई । उनके घर में लंगर चलाने के लिये और कोई भी न था । और साथ ही नानशाह को आप पर दृढ़ विश्वास था। वह तुरन्त ही आपकी शरण में आया और सेवा भाव में सब हाल सुनाया उसकी प्रार्थना करने पर आपने उत्तर दिया कि अपने समय पर मृत्यु होना अटल है । इस पर विलाप करना व्यर्थ है । परन्तु इस उत्तर के मिलने पर भी नानशाह अपनी विनती करता ही रहा । अन्त में आपको दया आई । और कहा अच्छा तुम अपनी आयु के कितने वर्ष घटाना चाहते हो उतने ही वर्ष आपकी माता फिर जीवित रह सकती हैं । नानशाह ने तुरन्त उत्तर दिया चौदह वर्ष फिर आप ने कहा कि घर जाकर उतने ही सिंगाड़े माता के शीर्ष से छू कर उनकी गिरियाँ खा जाओ फिर सेवक ने ऐसा ही किया । आप फिर स्वयं कुछ देर के लिए मौन हुए । कुछ मिनटों में उसकी माता उठ खड़ी हुई । नानशाह और दूसरे लोग यह देख कर चकित रह गए और प्रसन्न हुए । जनता में विशेषकर सेवकों में आपका प्रेम और विश्वास बड़ने लगा ।

त्रिसन्ध्या का स्नान

एक दिन आपके सेवकों ने त्रिसन्धया जाने की इच्छा प्रकट की विशेषकर उस समय जबकि दर्शन के दिन बीत चुके थे। आपने सेवकों की प्रार्थना स्वीकार की और निश्चित समय पर चल पड़े। जब रास्ते में आप सेवकों के साथ जा रहे थे। तो कुछ नटखट और उपद्रवी मुस्लमानों ने आपके चलने में रोड़े अटकाने का प्रयत्न किया। उनकी इस दुष्टता पर आपने रुष्ट होकर उनपर ऐसी दृष्टि डाली कि वे सभी अकड़ के रह गये। आप स्वयं सेवकों सहित आगे बढ़ते गये।

दूसरे दिन त्रिसन्ध्या पहुंच कर वहां डेरा जमाया। दर्शन का समय बीत चुका था। चश्मा कई दिनों से सूखा पड़ा था। इसलिये सेवकों में कुछ निराशा छा गई। इस पर आपने उनसे कहा मेरी लाठी डंडा चश्मे के भीतर घुमाओ और यह दोहा पढ़ लो।

आपने फारसी कविता में ये शब्द कहे।

चि कुदरत सुन्दह बारही राह न्याद

व इस तिक बालि शाहन शाहि रेशी

ये शब्द कागज़ पर लिख दिये और चश्मे में डालने की आज्ञा दी सेवकों ने ऐसा ही किया और चश्मे से पानी बहने लगा। आपके सिवाय सभी सेवकों ने स्नान किया। स्नान करके फिर आपसे भी स्नान करने की प्रार्थना की। किन्तु

आपने उत्तर दिया कि त्रिसन्ध्या के दर्शन मेरे बुलाने पर हुये हैं। अतः मेरा स्नान करना उचित नहीं है। इसके बाद आप आश्रम की और लौट पड़े रास्ते में वह नटखट मुस्लमान शरीर से उसी तरह अकड़े पड़े थे। सेवकों ने यह देख कर आपसे उन पर दया करने की प्रार्थना की। आपने विनती स्वीकार की और उनपर फिर दृष्टि डाली। जिस से वे सभी ठीक हुए, और आपके चरणों पर गिर पड़े। इस घटना के बाद वे सब ईश्वर भक्ति करने लगे।

एक मुसलमान स्त्री के घर निमन्त्रण

कश्मीर के सभी मुस्लमानों तथा हिन्दुओं को आप पर विश्वास और श्रृद्धा उत्पन्न हुई थी। उसे प्रकट करने के लिए एक मुस्लमान स्त्री भी आप की सेवा में आई एक दिन उसने आपको अपने यहाँ आने का निमन्त्रण दिया। आपने यह निमंत्रण स्वीकर कर लिया। जब आप वहां गए तो एक ब्राह्मण देवता भी आपके साथ वहां चले। जब भोजन का कुछ भाग आप खा बैठे तो आपके साथ आये हुए ब्राह्मण से अपने प्रश्न किया कि हे ब्राह्मण देवता आपने एक मुस्लमान के घर भोजन कैसे स्वीकार किया। ब्राह्मण ने तुरन्त- उत्तर दिया कि जब आप जैसे इतने बड़े संत खाना खाने बैठे तो मेरा क्या दोष। आपने कहा कि यह सब शक्ति की बात है। वैसे तो मैं साफ कर सकता हूँ। आपने फिर अपनी अध्यात्मिक शक्ति के बल से शरीर के आन्तरिक अंग बाहर निकाल कर

साफ करके दिखाये। आपकी यह आत्मशक्ति देखकर ब्राह्मण बड़ा लज्जित हुआ। उसकी फिर शुद्धी कराई गई और उसने आगे अपने धर्म पर रहने का उपदेश दिया गया।

"जहूरद्दीन देदभरी पर कृपा"

जहूरद्दीन नामक एक दुकानदार नवा कदल में रहता था। यह आपका सच्चा सेवक भी था। एक बार माल से भरी नौका ले जा रहा था तो कदल के निकट ऐसे जोर की आंधी आई और नौका उल्ट कर सारा माल नदी में डूब गया। यह देख कर जहूरद्दीन रोता-पीटता आप की शरण में आया। और इस प्रकार विनती करने लगा कि यह बला कैसे आ गई जबकि आपका नाम मुश्किल आसान है। आपने मुस्कराते हुए उत्तर दिया कि घबराना नहीं पहिले तो तुम फिर किश्ती देखकर आओ। और देख लों कि आपके कहने में कितनी सच्चाई है। तदानुसार जहूरद्दीन चला गया और नदी के निकट पहुंच कर उसने नाव को फिर ठीक हालत में पाया वह फूले न समाया और हर्षित हो कर घर चला गया।

"काश्मीर के मंदल वंश के एक व्यक्ति को जीवन दान देना"

खरयार श्रीनगर में मन्दलो वंश का एक मनुष्य आपका सेवक हो गुज़रा है। कहा जाता है कि वह धनाढय मनुष्य था उन्हीं दिनों देश में अकाल पड़ा था। हर एक अपनी अपनी

जगह पर अत्यन्त चिन्तित था। ऐसे वातावरण में यह स्वाभाविक ही है कि ऐसे समय में देवी, प्रकोप भी हुआ करते हैं और लोगों के मन में भी बुरे विचार और स्वपन्न आते हैं।

इन्हीं दिनों इस धनाढय मनुष्य के सामने अर्धस्वपनावस्था में कोई भयानक मूर्ति प्रकट हुई और उसे घसीटने लगा। किन्तु निश्चित् तथ्य यह है कि ईश्वर भक्तों अथवा संतों पर इन घटनाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है अतः मन्दलों वंश के इस मनुष्य ने आप का शुभ नाम स्मरण किया। आपका नाम लेकर ही तुरन्त उसने आपको सिहासन पर विराजमान पाया। फिर आपसे इस प्रकार प्रार्थना की कि ये बादशाह हर दो जहां में इस भयानक अजदहा जैसे देवके हाथों में फंस पीड़ित हूँ इसलिये मेरी रक्षा करो। यह सुनकर आपने अपने सेवक नानकशाह को इस बात की खोज करने की आज्ञा दी।

आदेशनुसार नानकशाह ने दोनों देव और सेवक को पकड़ कर आपके सामने उपस्थित किया आपने देव से प्रश्न किया कि तुम मेरे सेवक को इस प्रकार क्यों छेड़ते हो। क्या तुम्हें अपना जीवन प्यारा नहीं है। देव आपको देखकर एक दम भाग गया और यह आपका सेवक भी पीड़ा से छूट गया। इसी दिन से फिर कहत भी समाप्त हुआ दूसरे दिन मन्दलू वंश का यह सेवक भेंट लेकर आपकी सेवा में उपस्थिति हुआ और आप का धन्यवाद किया ये तो आपके चमत्कार अनगिनत है किन्तु इस छोटी पुस्तक में सब बातें विस्तार से लिखने में असमर्थ हैं।

आपका अन्तर्ध्यान

आपकी अध्यात्मिक शक्ति पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी थी और आप दूरदर्शी भी काफी थे। इसलिये अपने अन्तर्धयान होने का संकल्प अपने सभी सेवकों को कुछ दिन पहले ही फारसी कविता में इन शब्दों में बता दिया थाः-

रंजु व राहत चूं गले रैणा व जेबा दर नजर।

दर गुलिसतां ने जहां आदम बचशमें हर वशर।

हर कि आदम दर जहाँ रफत अज जहाँ हम चू हुवाव
जिन्दगानी अज हुबाव आमोखतह वावे शबाव।

अर्थः- संसार में प्रत्येक मनुष्य का जीवन जल के बुलबुले अथवा नाजुक पुष्प के समान है संसार के सुख और दुःख भी इसी फूल की तरह हैं, जो तुरन्त ही मुरझा जाता है।इसी प्रकार मनुष्य का जन्म और मृत्यु भी एक अनिवार्य सत्य है। इसी कारण से शरीर के लिये शोक करना बुद्धिमानी से वाहिर है। इसलिये हर आदमी को चाहिये कि वह अपना धर्म और कर्त्तव्य पहचान ले। लोक सेवा अपना सच्चा धर्म समझ कर करता रहे। श्री भगवत गीता में भी यह कहा गया है।

गीता पर्माण उर्दू में:-

जो कोई आया जहां में उनका फनाह है हाजिमी।

इस हुबावे जिन्दगी पर फिकिर करते हैं गावी॥

अपने फरज़ेमन्सभी दो दिलसे तू अंजाम दे॥

खिदमते खलके खुदा को सचऋचा आदेश मान ले ॥

अर्थः- आपने कई ढंग से अपने सेवकों को ढाढस बन्धाया और अन्त में अपने जन्म दिन पर साठ वर्ष की आयु में सैंकड़ों सेवकों से विदा हुए लेखक ने इस सम्बन्ध में ये शब्द कहे हैं-

पंचमी वैसाक के दिन मांस नो रोशन हुआ । दस गुना छः साठ वर्ष कर के आखिर जन्म तिथि पर चल बसे ॥

अर्थः- वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी के दिन जो कि आप का जन्म दिन था । ठीक इसी जन्म दिन पर आप स्वर्ग को सिधारे शरीर त्याग करने की घड़ी तक आप लोगों को उपदेश देते रहे और ॐ जपते जपते राम में लीन हुए । अन्तर्ध्यान होने से पहिले कुछ सेवक यह पूछने पर विवश हुए कि आपके पास प्राय मुस्लमान भी आया करते थे और विशेष रूप से शासन भी मुस्लमानों का था । इसलिये कहीं ऐसा न हो जाये कि वह आप के शरीर को दफन करने पर झगड़ा करें आपने उनकी शंका का फारसी कविता में उत्तर दिया ।

अर्थः- ऐसा तुच्छ विचार करना ठीक नहीं है । इन कटी बातों को छोड़कर इस मृतक शरीर को धर्म शास्त्र की रीति के अनुसार अग्नि भेंट करें मैं अब बाहरी रूप को त्याग रहा हूं । और लोगों की दृष्टि से ओझल हो रहा हूँ । आप गुप्त रीति से कुछ कोड़ियां वितस्ता नदी में डाल कर यह घोषणा करें कि "गया गया" और उसके बाद अपना काम करें । लोग इस तरफ दौड़ पड़े

यह कह कर वह अन्तर्ध्यान हो गए फिर सेवको ने ऐसा ही किया और इस समय के बीच आपके पवित्र शरीर का

अन्तिम संस्कार बटयार घाठ पर किया गया जहां आज कल छोटा सा मन्दिर खड़ा है जिसको जनता के दान को इकट्ठा करके बनवाया है। यह घाट तीर्थ के समान है और यहां पर आपने माता जी को गंगा जी का दर्शन कराया था आजकल वहाँ प्रतिदिन पूजा पाठ हुआ करता है।

आपके सुपुत्र रिहानन्द ने फिर वर्ष भर का क्रियाकर्म यथाविधि पूरा किया अन्त में उसे आपका शोक तथा वियोग सहन न हुआ और साधु बनकर भारत की यात्रा करने लगा इस यात्रा के बीच ही उसने शरीर त्याग भी किया। उनके दो सन्तान रहे। काशी पण्डित पीर तथा लाल पण्डित पीर काशी पण्डित भी साधू बनकर भारत की यात्रा पर चले। लाल पण्डित गृहस्थी थे। उनका वंश अभी तक चल रहा है जिसकी संक्षिप्त वंशावली नीचे दी जाती है
